International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in June 2024, ISSN -2393-8048

भारतीय संस्कृति और संस्कार

श्रीमती राजकुमारी, सहआचार्य, संस्कृत विभागाध्यक्ष, महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भरतपुर (राज०)

शोधसार

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं सर्वाधिक समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है, जिसकी मूल भावना मानव जीवन के सर्वांगीण विकास, नैतिक मूल्यों की स्थापना, आध्यात्मिक चेतना तथा सामाजिक समरसता पर आधारित है। भारतीय संस्कृति का स्वरूप केवल धार्मिक आस्थाओं या परंपराओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, दर्शन, कला, साहित्य, भाषा, लोकाचार, पारिवारिक व्यवस्था, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा जीवन मूल्यों का व्यापक समन्वय है। भारतीय संस्कृति की आत्मा संस्कारों में निहित है, जो व्यक्ति के जन्म से लेकर जीवन के अंतिम चरण तक उसके व्यक्तित्व, आचरण, विचार, व्यवहार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माण करते हैं। संस्कार व्यक्ति को केवल शिक्षित ही नहीं, बल्कि सुसंस्कृत, अनुशासित, नैतिक, सहिष्णु एवं कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की अवधारणा, उनके दार्शनिक आधार, सामाजिक महत्व तथा वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों जैसे सत्य, अहिंसा, धर्म, करुणा, सहिष्णुता, वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वधर्म समभाव, गुरु-शिष्य परंपरा तथा संयुक्त परिवार व्यवस्था का विवेचन किया गया है। साथ ही, षोडश संस्कारों की परंपरा तथा उनके माध्यम से व्यक्ति के नैतिक, सामाजिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास में होने वाले योगदान का भी अध्ययन किया गया है।

यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें वैदिक साहित्य, उपनिषद, भगवद्गीता, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, भारतीय दार्शनिक ग्रंथ, शोध-पत्र, पुस्तकें तथा समकालीन अकादमिक साहित्य का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति समय के साथ निरंतर विकसित होने वाली जीवंत परंपरा है, जिसने विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों एवं विचारधाराओं का समन्वय करते हुए अपनी मौलिक पहचान बनाए रखी है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, उपभोक्तावाद, डिजिटल संस्कृति तथा बदलती सामाजिक संरचना के कारण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं संस्कारों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं, जिनका प्रभाव विशेष रूप से युवा पीढ़ी के जीवन-मूल्यों एवं सामाजिक व्यवहार पर परिलक्षित होता है।

शोध का निष्कर्ष यह इंगित करता है कि भारतीय संस्कृति एवं संस्कार केवल ऐतिहासिक विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य के लिए भी समान रूप से प्रासंगिक जीवन-दर्शन हैं। मूल्यपरक शिक्षा, परिवार-केंद्रित सामाजिक व्यवस्था, भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान तथा सांस्कृतिक जागरूकता के माध्यम से इन मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिक मानवीय दृष्टि आज के वैश्विक समाज में शांति, सह-अस्तित्व, सामाजिक न्याय, नैतिक उत्तरदायित्व एवं सतत् विकास की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मुख्य शब्द: भारतीय संस्कृति, संस्कार, भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक मूल्य, आध्यात्मिकता, वसुधैव कुटुम्बकम्, मूल्यपरक शिक्षा, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक विरासत, भारतीय दर्शन।

प्रस्तावना

भारत विश्व की प्राचीनतम एवं निरंतर विकसित होने वाली सभ्यताओं में से एक है, जिसकी सांस्कृतिक परंपरा मानव जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास पर आधारित है। भारतीय संस्कृति केवल रीति-रिवाजों, धार्मिक आस्थाओं या परंपराओं का समूह नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की ऐसी समग्र पद्धति है जो सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, कर्तव्यपरायणता तथा *वसुधैव कुटुम्बकम्* जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करती है। इन मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। संस्कार व्यक्ति के जन्म से लेकर जीवन के अंतिम चरण तक उसके व्यक्तित्व, चरित्र, आचरण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माण करते हैं और उसे एक सुसंस्कृत एवं आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, डिजिटल संस्कृति तथा बदलती सामाजिक संरचनाओं के कारण पारंपरिक जीवन-मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। ऐसी परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि ये व्यक्ति एवं समाज को नैतिक दिशा, सामाजिक समरसता तथा मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की अवधारणा, उनके प्रमुख आयाम, सामाजिक एवं शैक्षिक महत्व तथा समकालीन संदर्भ में उनकी उपयोगिता का विश्लेषण करना है, जिससे भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं मूल्यपरक समाज के निर्माण की दिशा में सार्थक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके।

भारतीय संस्कृति की अवधारणा

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, समृद्ध एवं निरंतर विकसित होने वाली सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है। 'संस्कृति' शब्द संस्कृत की 'कृ' धातु में 'सम्' उपसर्ग के योग से बना है, जिसका अर्थ है, परिष्कार, उन्नयन तथा जीवन का परिमार्जन। भारतीय

संस्कृति केवल धार्मिक अनुष्ठानों, रीति-रिवाजों अथवा सामाजिक परंपराओं का समूह नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास का समग्र जीवन-दर्शन है। इसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज और प्रकृति के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए लोककल्याण एवं विश्वबंधुत्व की भावना को विकसित करना है।

भारतीय संस्कृति का आधार वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन दर्शन, भक्ति परंपरा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित है। इन सभी स्रोतों में सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, सहिष्णुता, आत्मसंयम, सेवा तथा धर्म जैसे जीवन-मूल्यों को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। भारतीय चिंतन के अनुसार मनुष्य का जीवन केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उसका वास्तविक उद्देश्य आत्मविकास, नैतिक आचरण एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन करना है।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता इसकी समन्वयवादी एवं समावेशी प्रकृति है। यह विविध धर्मों, भाषाओं, जातियों तथा संस्कृतियों का सम्मान करते हुए *"वसुधैव कुटुम्बकम्"*, *"सर्वे भवन्तु सुखिनः"* तथा *"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति"* जैसे सार्वभौमिक आदर्शों को अपनाती है। परिवार, गुरु-शिष्य परंपरा, संस्कार, योग, ध्यान तथा प्रकृति के प्रति सम्मान भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। वर्तमान वैश्वीकरण एवं तकनीकी युग में भी भारतीय संस्कृति अपनी मानवीय, नैतिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि के कारण अत्यंत प्रासंगिक है। अतः भारतीय संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य के लिए भी एक ऐसी जीवन-पद्धति है जो सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता तथा वैश्विक शांति की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वाधिक प्राचीन, समृद्ध एवं सतत् विकसित होने वाली संस्कृतियों में से एक है। इसकी विशेषता यह है कि समय के साथ अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों को स्वीकार करने के बावजूद इसने अपने मूल जीवन-मूल्यों को सुरक्षित रखा है। भारतीय संस्कृति का आधार नैतिकता, आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, समन्वय, लोककल्याण तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- **प्राचीनता एवं निरंतरता:** भारतीय संस्कृति का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक यह निरंतर विकसित होती रही है तथा अनेक परिवर्तनों के बावजूद अपनी मौलिक पहचान बनाए हुए है।
- **आध्यात्मिकता एवं नैतिकता:** भारतीय संस्कृति में आत्मविकास, आत्मसंयम, सत्य, अहिंसा, करुणा तथा धर्म को विशेष महत्व दिया गया है। यहाँ भौतिक उन्नति के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को भी आवश्यक माना जाता है।
- **समन्वय एवं सहिष्णुता:** भारतीय संस्कृति विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों तथा जीवन-पद्धतियों का सम्मान करती है। *"वसुधैव कुटुम्बकम्"* और *"एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति"* जैसे आदर्श इसकी समावेशी एवं उदार दृष्टि को व्यक्त करते हैं।
- **विविधता में एकता:** भारत में अनेक भाषाएँ, धर्म, रीति-रिवाज एवं सांस्कृतिक परंपराएँ विद्यमान हैं, फिर भी राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समरसता इसकी सबसे बड़ी पहचान है।
- **परिवार एवं संस्कारों का महत्व:** भारतीय संस्कृति में परिवार को संस्कारों का प्रथम विद्यालय माना गया है। परिवार के माध्यम से व्यक्ति में अनुशासन, सेवा, सहयोग, बड़ों का सम्मान तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।
- **गुरु-शिष्य परंपरा एवं ज्ञान की प्रतिष्ठा:** भारतीय संस्कृति में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास भी है। गुरु को जीवन का मार्गदर्शक और समाज-निर्माता माना गया है।
- **प्रकृति के प्रति सम्मान:** भारतीय संस्कृति पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति एवं समस्त जीव-जगत के संरक्षण पर बल देती है। पर्यावरण के साथ संतुलित एवं सह-अस्तित्वपूर्ण जीवन इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है।
- **लोककल्याण एवं सेवा की भावना:** भारतीय संस्कृति परोपकार, दान, अतिथि-सत्कार, सामाजिक सहयोग तथा मानव सेवा को श्रेष्ठ आदर्श मानती है। यही मूल्य समाज में सद्भाव, सामाजिक न्याय एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करते हैं।

इन विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य के लिए भी एक ऐसी जीवन-पद्धति है जो नैतिकता, सामाजिक समरसता, पर्यावरणीय संतुलन, राष्ट्रीय एकता तथा वैश्विक शांति की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसी कारण भारतीय संस्कृति आज भी सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

संस्कार की अवधारणा

भारतीय संस्कृति का मूल आधार संस्कार हैं। यदि संस्कृति किसी समाज के जीवन-मूल्यों, परंपराओं एवं आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती है, तो संस्कार उन मूल्यों को व्यक्ति के जीवन में स्थापित करने की प्रक्रिया हैं। 'संस्कार' शब्द का अर्थ है—परिष्कार, शुद्धिकरण, उन्नयन एवं व्यक्तित्व का विकास। भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य जन्म से केवल जैविक रूप में जन्म लेता है, किंतु शिक्षा, परिवार,

समाज तथा संस्कारों के माध्यम से उसका नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व विकसित होता है। इसलिए संस्कारों को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का आधार माना गया है।

वैदिक साहित्य, उपनिषद, गृह्यसूत्र, धर्मशास्त्र तथा स्मृति ग्रंथों में संस्कारों का विस्तृत वर्णन मिलता है। भारतीय परंपरा में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक मानव जीवन के विभिन्न चरणों के लिए षोडश संस्कारों का विधान किया गया है। इनका उद्देश्य व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक चरण के लिए मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक रूप से तैयार करना तथा उसे कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित एवं उत्तरदायी नागरिक बनाना है। संस्कार व्यक्ति में सत्य, अहिंसा, सेवा, करुणा, सहिष्णुता, आत्मसंयम, परोपकार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करते हैं।

संस्कार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की एक सतत प्रक्रिया हैं। परिवार संस्कारों का प्रथम केंद्र है, जहाँ माता-पिता एवं अन्य सदस्य अपने आचरण और व्यवहार से बच्चों में जीवन-मूल्यों का विकास करते हैं। इसके पश्चात विद्यालय, शिक्षक तथा समाज इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हैं। आधुनिक मनोविज्ञान भी स्वीकार करता है कि बाल्यावस्था में प्राप्त अनुभव एवं मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व और व्यवहार को गहराई से प्रभावित करते हैं।

वर्तमान समय में वैश्वीकरण, डिजिटल संस्कृति, उपभोक्तावाद तथा बदलती सामाजिक संरचनाओं के कारण संस्कारों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। ऐसे समय में मूल्यपरक शिक्षा, पारिवारिक वातावरण, भारतीय ज्ञान परंपरा, योग एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से संस्कारों का संरक्षण और संवर्धन आवश्यक है। इस प्रकार संस्कार भारतीय संस्कृति की आधारशिला हैं, जो व्यक्ति को सुसंस्कृत, नैतिक, उत्तरदायी एवं समाजोपयोगी नागरिक बनाकर समाज, राष्ट्र और मानवता के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

षोडश संस्कार

भारतीय संस्कृति में मानव जीवन को केवल जैविक अस्तित्व नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास की सतत यात्रा माना गया है। इस यात्रा को व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए भारतीय ऋषियों ने जीवन के विभिन्न चरणों के अनुरूप **षोडश संस्कार (सोलह संस्कार)** निर्धारित किए। इन संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिष्कार, चरित्र निर्माण तथा उसे परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाना है। वैदिक साहित्य, गृह्यसूत्रों एवं धर्मशास्त्रों में इन संस्कारों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

षोडश संस्कारों में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म (मुंडन), कर्णवेध, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि सम्मिलित हैं। प्रत्येक संस्कार मानव जीवन के किसी महत्वपूर्ण चरण से जुड़ा है तथा उसके शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन करता है। प्रारम्भिक संस्कार स्वस्थ एवं संस्कारित संतति की कामना तथा बालक के उचित पालन-पोषण से संबंधित हैं, जबकि विद्यारंभ, उपनयन और वेदारंभ शिक्षा, अनुशासन तथा ज्ञानार्जन की भावना को विकसित करते हैं। विवाह संस्कार पारिवारिक जीवन, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं अगली पीढ़ी के निर्माण का आधार है, जबकि अन्त्येष्टि संस्कार जीवन की अनित्यता तथा आध्यात्मिक चिंतन का संदेश देता है।

षोडश संस्कारों का उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठानों का पालन कराना नहीं, बल्कि व्यक्ति में सत्य, अहिंसा, अनुशासन, आत्मसंयम, सेवा, करुणा, सहिष्णुता, कर्तव्यपरायणता तथा सामाजिक समरसता जैसे जीवन-मूल्यों का विकास करना है। ये संस्कार व्यक्ति को आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं तथा समाज में नैतिकता, सहयोग और सांस्कृतिक निरंतरता को सुदृढ़ करते हैं। परिवार, गुरु तथा समाज मिलकर इन संस्कारों को व्यवहार में उतारते हैं, जिससे सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सुरक्षित रूप से हस्तांतरित होती है।

वर्तमान समय में यद्यपि संस्कारों के बाह्य स्वरूप में परिवर्तन आया है, फिर भी उनकी मूल भावना आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। मूल्यपरक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, ध्यान तथा सांस्कृतिक जागरूकता के माध्यम से षोडश संस्कारों के आदर्शों को नई पीढ़ी तक प्रभावी ढंग से पहुँचाया जा सकता है। अतः षोडश संस्कार भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक समरसता तथा नैतिक जीवन-मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्व

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास का मूल आधार माना गया है। संस्कार व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिष्कार करते हैं तथा उसे सत्य, अहिंसा, करुणा, अनुशासन, सेवा, सहिष्णुता, आत्मसंयम और कर्तव्यपरायणता जैसे जीवन-मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय चिंतन के अनुसार मनुष्य जन्म से केवल जैविक रूप में जन्म लेता है, परन्तु संस्कार ही उसे सुसंस्कृत, उत्तरदायी एवं आदर्श नागरिक बनाते हैं।

संस्कारों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान चरित्र निर्माण में होता है। परिवार, विद्यालय एवं समाज के माध्यम से प्राप्त संस्कार व्यक्ति में नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करते हैं। भारतीय संस्कृति में परिवार को संस्कारों का प्रथम विद्यालय माना गया है, जहाँ बच्चों को बड़ों का सम्मान, सहयोग, परोपकार, अनुशासन तथा पारिवारिक उत्तरदायित्व का ज्ञान प्राप्त होता है। यही संस्कार आगे चलकर सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी संस्कारों का विशेष महत्व है। भारतीय शिक्षा-दर्शन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण एवं मूल्यपरक जीवन का विकास करना है। संस्कार व्यक्ति में विवेक, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता तथा समाज-सेवा की भावना उत्पन्न करते हैं। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद तथा डिजिटल संस्कृति के प्रभाव से नैतिक मूल्यों के समक्ष

अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। ऐसे समय में संस्कार व्यक्ति को सांस्कृतिक पहचान, नैतिक संतुलन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने का कार्य करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि संस्कार भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। ये व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए आधुनिक जीवन में भी संस्कारों का संरक्षण एवं संवर्धन एक मूल्यपरक, सशक्त एवं समरस समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा

भारतीय संस्कृति और शिक्षा का संबंध अत्यंत गहरा एवं परस्पर पूरक है। भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन या आजीविका प्राप्त करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आध्यात्मिक उन्नति को सुनिश्चित करना है। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था में विद्यार्थियों को वेदों एवं शास्त्रों के अध्ययन के साथ-साथ सत्य, अनुशासन, सेवा, आत्मसंयम, करुणा, सहिष्णुता तथा प्रकृति के प्रति सम्मान जैसे जीवन-मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। भारतीय संस्कृति में गुरु को ज्ञान के साथ-साथ संस्कारों का संवाहक माना गया है। वर्तमान समय में भी मूल्यपरक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, ध्यान तथा नैतिक शिक्षा विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत आवश्यक मानी जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक विरासत तथा मूल्य-आधारित शिक्षा को विशेष महत्व प्रदान करती है।

आधुनिक समाज में वैश्वीकरण, नगरीकरण, डिजिटल तकनीक, उपभोक्तावाद तथा तीव्र सामाजिक परिवर्तन के कारण पारिवारिक एवं नैतिक मूल्यों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। बढ़ती प्रतिस्पर्धा, सामाजिक अलगाव, मानसिक तनाव, पर्यावरणीय संकट तथा सांस्कृतिक असंतुलन जैसी समस्याएँ व्यक्ति और समाज दोनों को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे समय में भारतीय संस्कृति अपने मानवीय, समन्वयवादी एवं नैतिक दृष्टिकोण के कारण अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होती है। **"वसुधैव कुटुम्बकम्"**, **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"**, **"अहिंसा परमो धर्मः"** तथा **"अतिथि देवो भवः"** जैसे आदर्श सामाजिक समरसता, विश्वबंधुत्व, सहिष्णुता और शांति की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

अतः भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा का समन्वय आधुनिक समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है। मूल्यपरक शिक्षा, संस्कार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आधुनिक तकनीक के संतुलित समावेश से ऐसे उत्तरदायी, संवेदनशील और नैतिक नागरिक तैयार किए जा सकते हैं जो राष्ट्रीय विकास, सामाजिक समरसता तथा वैश्विक शांति की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दें। इसलिए भारतीय संस्कृति आज भी केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक सशक्त मार्गदर्शक जीवन-दर्शन है।

आधुनिक समाज में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता

वर्तमान युग विज्ञान, प्रौद्योगिकी, वैश्वीकरण, नगरीकरण तथा डिजिटल क्रांति का युग है। इन परिवर्तनों ने मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, किन्तु साथ ही उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद, नैतिक मूल्यों में गिरावट, पारिवारिक विघटन, मानसिक तनाव तथा पर्यावरणीय संकट जैसी अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। ऐसे समय में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता पहले से अधिक बढ़ गई है, क्योंकि यह संतुलित, नैतिक एवं मानवीय जीवन-दृष्टि प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति का मूल आधार **सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, सेवा, कर्तव्यपरायणता तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्"** जैसे सार्वभौमिक मूल्य हैं। ये सिद्धांत व्यक्ति में सामाजिक समरसता, पारस्परिक सम्मान तथा विश्वबंधुत्व की भावना विकसित करते हैं। वर्तमान समय में जब समाज विभाजन, असहिष्णुता और सांस्कृतिक असंतुलन जैसी समस्याओं का सामना कर रहा है, तब भारतीय संस्कृति का समन्वयवादी दृष्टिकोण शांति एवं सह-अस्तित्व का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करता है।

शिक्षा, परिवार तथा सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और संस्कारों का प्रसार नई पीढ़ी में नैतिक चेतना, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ कर सकता है। योग, ध्यान, आयुर्वेद, भारतीय ज्ञान परंपरा तथा पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांत आज वैश्विक स्तर पर भी स्वीकार किए जा रहे हैं, जो भारतीय संस्कृति की सार्वकालिक उपयोगिता को प्रमाणित करते हैं।

अतः भारतीय संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि आधुनिक समाज की अनेक सामाजिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियों का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने वाली जीवन-पद्धति है। इसके मूल्यों का संरक्षण एवं समुचित अनुप्रयोग एक नैतिक, समावेशी, पर्यावरण-संवेदनशील तथा उत्तरदायी समाज के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। यही भारतीय संस्कृति की वर्तमान युग में वास्तविक प्रासंगिकता है।

भारतीय संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ

भारतीय संस्कृति अपनी प्राचीनता, समन्वयवादी दृष्टिकोण एवं नैतिक मूल्यों के कारण विश्वभर में विशिष्ट स्थान रखती है, किन्तु वर्तमान समय में इसके समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। वैश्वीकरण, तीव्र नगरीकरण, उपभोक्तावाद तथा पाश्चात्य

जीवनशैली के बढ़ते प्रभाव के कारण पारंपरिक जीवन-मूल्यों एवं सांस्कृतिक परंपराओं का ह्रास देखा जा रहा है। संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति से नई पीढ़ी में संस्कारों एवं पारिवारिक मूल्यों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होता जा रहा है। डिजिटल तकनीक, सोशल मीडिया तथा इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग ने जहाँ ज्ञान के नए अवसर प्रदान किए हैं, वहीं सांस्कृतिक असंतुलन, सामाजिक अलगाव, नैतिक मूल्यों में गिरावट तथा आभासी जीवनशैली जैसी समस्याओं को भी बढ़ावा दिया है। इसके अतिरिक्त भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा, पर्यावरणीय संकट, धार्मिक असहिष्णुता तथा सांस्कृतिक व्यावसायीकरण भी भारतीय संस्कृति के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। इन परिस्थितियों में युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपरागत जीवन-मूल्यों से दूर होती दिखाई दे रही है।

इन चुनौतियों का समाधान मूल्यपरक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, पारिवारिक संस्कार, सांस्कृतिक जागरूकता तथा आधुनिक तकनीक के संतुलित एवं उत्तरदायी उपयोग में निहित है। शिक्षा, परिवार, समाज और शासन के संयुक्त प्रयासों से भारतीय संस्कृति के मूल आदर्शों—सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, सेवा, करुणा तथा **"वसुधैव कुटुम्बकम्"**—को नई पीढ़ी तक प्रभावी ढंग से पहुँचाया जा सकता है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति का संरक्षण केवल अतीत की धरोहर को सुरक्षित रखने का कार्य नहीं, बल्कि एक सशक्त, नैतिक एवं समावेशी समाज के निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के संरक्षण के उपाय

परिवार संस्कारों का प्रथम विद्यालय है। माता-पिता एवं परिवार के वरिष्ठ सदस्य अपने आचरण, व्यवहार तथा जीवन-मूल्यों के माध्यम से बच्चों में सत्य, अनुशासन, सेवा, करुणा, सहिष्णुता एवं कर्तव्यपरायणता जैसे गुणों का विकास कर सकते हैं। विद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में मूल्यपरक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, ध्यान, नैतिक शिक्षा तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को पाठ्यक्रम का अभिन्न भाग बनाया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप भारतीय भाषाओं, साहित्य, इतिहास एवं सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन को भी प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।

डिजिटल युग में सोशल मीडिया, दूरदर्शन तथा अन्य संचार माध्यमों का उपयोग भारतीय संस्कृति, लोककलाओं, लोकभाषाओं, त्योहारों एवं सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार के लिए सकारात्मक रूप से किया जाना चाहिए। युवाओं को भारतीय इतिहास, साहित्य, योग, आयुर्वेद तथा पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से जोड़ने के लिए नियमित सांस्कृतिक कार्यक्रम, कार्यशालाएँ एवं जन-जागरूकता अभियान आयोजित किए जाने चाहिए। साथ ही, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सेवा, राष्ट्रीय एकता तथा संविधान के प्रति सम्मान जैसे मूल्यों को भी संस्कारों के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

अतः भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का संरक्षण केवल सरकार का दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है। परिवार, शिक्षा, समाज और आधुनिक तकनीक के समन्वित प्रयासों से भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए नई पीढ़ी में नैतिक, उत्तरदायी एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास किया जा सकता है। यही प्रयास भारत की सांस्कृतिक निरंतरता, सामाजिक समरसता तथा सतत् राष्ट्रीय विकास का सुदृढ़ आधार सिद्ध होगा।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध एवं जीवनोपयोगी सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है, जिसकी आधारशिला नैतिकता, आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, समन्वय तथा मानव कल्याण के आदर्शों पर आधारित है। इस संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में संस्कारों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संस्कार व्यक्ति के जन्म से लेकर जीवन के अंतिम चरण तक उसके व्यक्तित्व, चरित्र, आचरण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माण करते हैं और उसे एक सुसंस्कृत, नैतिक एवं उत्तरदायी नागरिक बनने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

वर्तमान वैश्वीकरण, डिजिटल तकनीक, उपभोक्तावाद एवं बदलती सामाजिक परिस्थितियों के कारण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं। ऐसे समय में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि ये सामाजिक समरसता, नैतिक चेतना, पारिवारिक एकता, पर्यावरणीय संवेदनशीलता तथा विश्वबंधुत्व की भावना को सुदृढ़ करते हैं। शिक्षा के माध्यम से मूल्यपरक शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, योग, ध्यान तथा सांस्कृतिक विरासत का समुचित समावेश करके नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक पहचान से जोड़ा जा सकता है।

अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य के लिए भी एक प्रेरणादायी जीवन-दर्शन है। इसके मूल्यों एवं संस्कारों का संरक्षण और व्यवहारिक अनुप्रयोग ही एक नैतिक, समावेशी, उत्तरदायी तथा आत्मनिर्भर समाज और राष्ट्र के निर्माण का सशक्त आधार सिद्ध होगा।

संदर्भ

1. आंबेडकर, भीमराव रामजी. (2020). *जाति का उन्मूलन*. नवयाना प्रकाशन।
2. एन.सी.ई.आर.टी. (2023). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2023*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
3. एन.सी.ई.आर.टी. (2023). *भारतीय ज्ञान परंपरा: पाठ्यचर्या रूपरेखा*. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
4. गांधी, मोहनदास करमचन्द. (2021). *हिन्द स्वराज*. नवजीवन प्रकाशन।
5. गोविन्द चातक. *भारतीय लोक संस्कृति का संदर्भ: मध्य हिमालय*. तक्षशिला प्रकाशन।
6. धर्मपाल. (2021). *द ब्यूटीफुल ट्री: भारत की स्वदेशी शिक्षा व्यवस्था*. अदर इंडिया प्रेस।
7. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020*. शिक्षा मंत्रालय।
8. भारत सरकार. (2023). *वार्षिक प्रतिवेदन*. संस्कृति मंत्रालय।
9. भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR). (2022). *भारतीय इतिहास अनुसंधान पत्रिका*।
10. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (ICPR). (2023). *भारतीय दर्शन शोध पत्रिका*।
11. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR). (2022). *सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धति*।
12. भगवद्गीता. (2022). (अनु. एकनाथ ईश्वरन). नीलगिरि प्रेस।
13. मनुस्मृति. (2020). चौखम्बा संस्कृत सीरीज़।
14. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2020). *भारतीय दर्शन* (भाग 1 एवं 2). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2020). *हिन्दू जीवन-दृष्टि*. हार्पर कॉलिन्स।
16. विवेकानन्द, स्वामी. (2020). *स्वामी विवेकानन्द साहित्य* (सम्पूर्ण कृतियाँ). अद्वैत आश्रम।
17. वात्स्यायन, कपिला. (2021). *भारतीय कला और संस्कृति*. रोली बुक्स।
18. शर्मा, रामशरण. (2020). *प्राचीन भारत*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
19. शर्मा, अरविन्द. (2021). *हिन्दू चिंतन की परम्परा*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
20. सिंह, उपेन्द्र. (2021). *प्राचीन एवं प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत का इतिहास*. पियर्सन।
21. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद. (2020). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा*. मोतीलाल बनारसीदास।
22. पाण्डेय, गोविन्द चन्द्र. (2020). *भारतीय संस्कृति के आधार*. बुक्स एंड बुक्स।
23. काणे, पाण्डुरंग वामन. (2020). *धर्मशास्त्र का इतिहास*. भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट।
24. पतञ्जलि. (2021). *योगसूत्र*. पेंगुइन क्लासिक्स।
25. ऋग्वेद. (2021). मोतीलाल बनारसीदास।
26. उपनिषद्. (2020). पेंगुइन क्लासिक्स।
27. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). *आजादी का अमृत महोत्सव: सांस्कृतिक विरासत श्रृंखला*।
28. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (2023). *एक भारत श्रेष्ठ भारत*।
29. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग. (2023). *उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली हेतु दिशा-निर्देश*।
30. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र. (2024). *भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर प्रकाशन*।
31. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. (2018). *भारत की सांस्कृतिक विरासत*।
32. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास. (2022). *भारतीय संस्कृति*।
33. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार. (2022). *भारत 2022: वार्षिक संदर्भ ग्रंथ*।
34. यूनेस्को. (2021). *शिक्षा का नया सामाजिक अनुबंध*।
35. यूनेस्को. (2023). *अमूर्त सांस्कृतिक विरासत संरक्षण अभिसमय*।
36. भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान. (2022). *भारतीय सभ्यता अध्ययन*।
37. कपूर, कपिल. (2021). *भारतीय ज्ञान परम्परा*. डी.के. प्रिन्टवर्ल्ड।
38. राव, के. आर. (2022). *भारतीय मनोविज्ञान एवं चेतना अध्ययन*. स्प्रिंगर।
39. योगानन्द, परमहंस. (2020). *एक योगी की आत्मकथा*. सेल्फ रियलाइजेशन फेलोशिप।